1954C Dog versus Lion

Singh Shvan Sameekcha (In Anekant, August, 1954)

Reprinted in Sanmati Sandesh June 1980

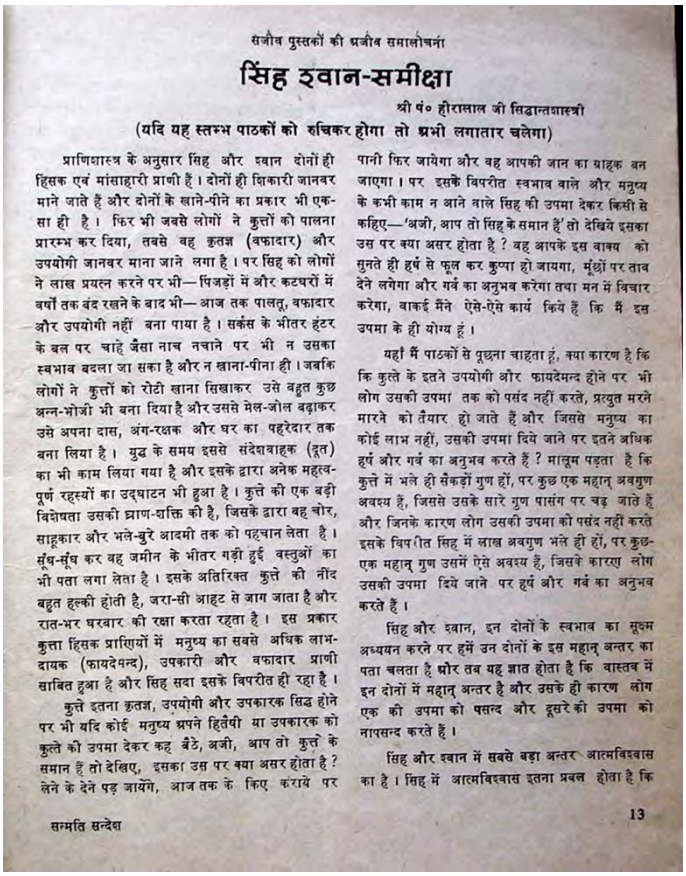

संजीव पुस्तकों की अजीव समालोचना

सिंह श्वान-समीक्षा

श्री पं० हीरालाल जी सिद्धान्तशास्त्री

(यदि यह स्तम्भ पाठकों को रुचिकर होगा तो अभी लगातार चलेगा)

प्राणिशास्त्र के अनुसार सिंह और श्वान दोनों ही हिंसक एवं मांसाहारी प्राणी हैं। दोनों ही शिकारी जानवर माने जाते हैं और दोनों के खाने-पीने का प्रकार भी एक-सा ही है। फिर भी जबसे लोगों ने कुत्तों को पालना प्रारम्भ कर दिया, तबसे वह कृतज्ञ (वफादार) और उपयोगी जानवर माना जाने लगा है। पर सिंह को लोगों ने लाख प्रयत्न करने पर भी—पिंजड़ों में और कटघरों में वर्षों तक बंद रखने के बाद भी—आज तक पालतू, वफादार और उपयोगी नहीं बना पाया है। सर्कस के भीतर हंटर के बल पर चाहे जैसा नाच नचाने पर भी न उसका स्वभाव बदला जा सका है और न खाना-पीना ही। जबकि लोगों ने कुत्तों को रोटी खाना सिखाकर उसे बहुत कुछ अन्न-भोजी भी बना दिया है और उससे मेल-जोल बढ़ाकर उसे अपना दास, अंग-रक्षक और घर का पहरेदार तक बना लिया है। युद्ध के समय इससे संदेशवाहक (दूत) का भी काम लिया गया है और इसके द्वारा अनेक महत्व-पूर्ण रहस्यों का उद्घाटन भी हुआ है। कुत्ते की एक बड़ी विशेषता उसकी घ्राण-शक्ति की है, जिसके द्वारा वह चोर, साहूकार और भले-बुरे आदमी तक को पहचान लेता है। सूंघ-सूंघ कर वह जमीन के भीतर गड़ी हुई वस्तुओं का भी पता लगा लेता है। इसके अतिरिक्त कुत्ते की नींद बहुत हल्की होती है, जरा-सी आहट से जाग जाता है और रात-भर घरबार की रक्षा करता रहता है। इस प्रकार कुत्ता हिंसक प्राणियों में मनुष्य का सबसे अधिक लाभ-दायक (फायदेमन्द), उपकारी और वफादार प्राणी साबित हुआ है और सिंह सदा इसके विपरीत ही रहा है।

कुत्ते इतना कृतज्ञ, उपयोगी और उपकारक सिद्ध होने पर भी यदि कोई मनुष्य अपने हितैषी या उपकारक को कुत्ते की उपमा देकर कह बैठे, अजी, आप तो कुत्ते के समान हैं तो देखिए, इसका उस पर क्या असर होता है? लेने के देने पड़ जायेंगे, आज तक के किए कराये पर पानी फिर जायेगा और वह आपकी जान का ग्राहक बन जाएगा। पर इसके विपरीत स्वभाव वाले और मनुष्य के कभी काम न आने वाले सिंह की उपमा देकर किसी से कहिए—'अजी, आप तो सिंह के समान हैं' तो देखिये इसका उस पर क्या असर होता है? वह आपके इस वाक्य को सुनते ही हर्ष से फूल कर कुप्पा हो जायगा, मूंछों पर ताव देने लगेगा और गर्व का अनुभव करेगा तथा मन में विचार करेगा, वाकई मैंने ऐसे-ऐसे कार्य किये हैं कि मैं इस उपमा के ही योग्य हूं।

यहाँ मैं पाठकों से पूछना चाहता हूं, क्या कारण है कि कि कुत्ते के इतने उपयोगी और फायदेमन्द होने पर भी लोग उसकी उपमा तक को पसंद नहीं करते, प्रत्युत मरने मारने को तैयार हो जाते हैं और जिससे मनुष्य का कोई लाभ नहीं, उसकी उपमा दिये जाने पर इतने अधिक हर्ष और गर्व का अनुभव करते हैं? मालूम पड़ता है कि कुत्ते में भले ही सैकड़ों गुण हों, पर कुछ एक महान् अवगुण अवश्य हैं, जिससे उसके सारे गुण पासंग पर चढ़ जाते हैं और जिनके कारण लोग उसकी उपमा को पसंद नहीं करते इसके विपरीत सिंह में लाख अवगुण भले ही हों, पर कुछ-एक महान् गुण उसमें ऐसे अवश्य हैं, जिसके कारण लोग उसकी उपमा दिये जाने पर हर्ष और गर्व का अनुभव करते हैं।

सिंह और श्वान, इन दोनों के स्वभाव का सूक्ष्म अध्ययन करने पर हमें उन दोनों के इस महान् अन्तर का पता चलता है और तब यह ज्ञात होता है कि वास्तव में इन दोनों में महान् अन्तर है और उसके ही कारण लोग एक की उपमा को पसन्द और दूसरे की उपमा को नापसन्द करते हैं।

सिंह और श्वान में सबसे बड़ा अन्तर आत्मविश्वास का है। सिंह में आत्मविश्वास इतना प्रबल होता है कि

जिसके कारण वह अकेले ही सैकड़ों हाथियों के साथ मुकाबला करने की क्षमता रखता है। परन्तु कुत्ते में आत्मविश्वास की कमी होती है। वह अपने मालिक के भरोसे पर ही सामने वाले पर आक्रमण करता है। जब तक उसे अपने मालिक की ओर से प्रोत्तेजन मिलता रहेगा, वह आगे बढ़ता रहेगा। आक्रमण करते हुए भी वह बार-बार मालिक की ओर झांकता रहेगा और ज्यों ही मालिक का प्रोत्तेजन मिलना बन्द होगा कि वह तुरन्त दुम दबाकर वापिस लौट आयेगा। पर सिंह किसी दूसरे भरोसे से शत्रु पर आक्रमण नहीं करता। आक्रमण करते समय वह कभी किसी की सहायता के लिए पीछे नहीं झांकता और शत्र से हार कर तथा दुम दबाकर वापिस लौटना तो वह जानता ही नहीं। वह 'कार्यं वा साधयामि, देहं वा पातयामि' का महामन्त्र जन्म से पढ़ा हुआ होता है। अपने इस अदम्य आत्मविश्वास के बल पर ही वह बड़े से बड़े जानवरों पर भी विजय पाता है और जंगल का राजा बनता है।

सिंह और श्वान में दूसरा बड़ा अन्तर विवेक का है। कुत्ते में विवेक की कमी स्पष्ट है। यदि कहीं किसी अपरिचित गली से आप निकलें, कोई कुत्ता आप को काटने दौड़े और आप अपनी रक्षा के लिए उसे लाठी मारें तो वह लाठी को पकड़ कर चबाने की कोशिश करेगा। बस बेबकूफ को यह विवेक नहीं है कि यह लाठी मुझे मारने वाली नहीं है। मारने वाला तो यह सामने खड़ा हुआ पुरुष है फिर मैं इस लकड़ी को क्यों चबाऊं? दूसरा अविवेक का उदाहरण लीजिए—कुत्ते को यदि कहीं हड्डी का टुकड़ा पड़ा हुआ मिल जाय तो यह उसे उठा कर चबायेगा और हड्डी की तीखी नोकों से निकले हुए अपने मुख के खून का स्वाद लेकर फूला नहीं समायेगा। वह समझता है कि यह खून इस हड्डी में से निकल रहा है, पर सिंह का स्वभाव ठीक इससे विपरीत होता है। वह कभी हड्डी नहीं चबाता और न आक्रमण करने वाले की लाठी, बन्दूक या भाला आदि को पकड़ कर ही उसे चबाने की कोशिश करता है, क्योंकि उसे यह विवेक है कि ये लाठी, बन्दूक आदि जड़ पदार्थ मेरा स्वतः कुछ बिगाड़ नहीं कर सकते, ये लाठी आदि मुझे मारने वाले नहीं, बल्कि इनका उपयोग करने वाला यह मनुष्य ही मुझे मारने वाला है। अपने इस विवेक के कारण वह लाठी आदि को पकड़ने या पकड़ कर उन्हें चबाने की चेष्टा नहीं करता, प्रत्युत उनके चलाने वाले पर आक्रमण कर उसका काम तमाम कर देता है।

सिंह और श्वान में एक बड़ा और अन्तर पुरुषार्थ का है। कुत्ते में पुरुषार्थ की कमी होती है, अतएव वह सदा रोटी के टुकड़े के लिये दूसरों के पीछे पूंछ हिलाता हुआ फिरा करता है और टुकड़ों का गुलाम बना रहता है। जब तक आप उसे टुकड़े डालते रहेंगे, आप की गुलामी करेगा और जब दूसरे ने टुकड़े डालना प्रारम्भ किये, तभी से वह उसकी गुलामी शुरु कर देगा। वह 'गंगा गये गंगादास और जमुना गये जमुना दास' लोकोक्ति को चरितार्थ करता है। पर सिंह कभी भी रोटी का गुलाम नहीं है। वह पेट भरने के लिए न दूसरों के पीछे पूंछ हिलाता फिरता है और न कुत्ते के समान दूसरों की जूठी हड्डियाँ ही चाटा करता है। सिंह प्रतिदिन अपनी रोटी अपने पुरुषार्थ से स्वयं उत्पन्न करता है। सिंह के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह कभी भी दूसरों के मारे हुए शिकार को हाथ नहीं लगाता। स्वतंत्र सिंह की तो बात जाने दीजिए, पर कटघरों में बन्द सिंहों के सामने भी जब उनको भोजन लाया जाता है, तब वे भोजन दाता की ओर न तो दीनतापूर्ण नेत्रों सेही देखते है, न कुत्ते के समान पूंछ हिलाते हैं और न जमीन पर पड़ कर अपना उदर दिखाते हुए गिड़-गिड़ाते ही हैं। प्रत्युत इसके एक बार गम्भीर गर्जना कर मानों वे अपना विरोध प्रकट करते हुए यह दिखाते हैं कि अरे मानव ? क्या तू मुझे अब भी टुकड़ों के गुलाम बनाने का व्यर्थ प्रयास कर अपने को दातार होने का अहंकार करता है ? कहने का अर्थ यह कि पराधीन और कटघरे में बन्द सिंह भी रोटी का गुलाम नहीं है, पर स्वतंत्र और आजाद रहने वाला भी कुत्ता सदा टुकड़ों का गुलाम है। कुत्ते को अपने पुरुषार्थ का भान नहीं, पर सिंह अपने पुरुषार्थ से खूब परिचित है और उसके द्वारा ही अपनी रोटी स्वयं उपार्जित करता है।

इस उपर्युक्त अन्तर के अतिरिक्त सिंह और श्वान में एक और महान् अन्तर है और वह यह कि कुत्ता 'जाति देख घुर्राऊ' स्वभावी है। अपने जाति वालों को देखकर यह भौंकता, गुर्राता और काटने को दौड़ता है। इससे अधिक नीचता की और पराकाष्ठा क्या हो सकती है ? पर सिंह कभी भी दूसरे सिंह को देख कर गुर्राता या काटने को नहीं

दौड़ता है, बल्कि जैसे एक राजा दूसरे राजा से सम्मान और गौरव के साथ मिलता है, ठीक उसी प्रकार दो सिंह परस्पर मिलते हैं। सिंह में अपने सजातीय बन्धुओं के साथ वात्सल्य भाव भरा रहता है, जबकि कुत्ता ठीक इसके विपरीत है। उसमें स्वजाति वात्सल्य का नामों-निशान भी नहीं होता। स्वजाति वात्सल्य गुण सर्वगुणों में सिरमौर्य है और उसके होने से सिंह वास्तव में अपनी सिंह संज्ञा को सार्थक करता है और उसके न होने से कुत्ता 'कुत्ता' ही बना रहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सिंह में आत्मविश्वास विवेक, पुरुषार्थशीलता और स्वजाति वत्सलता ये चार अनुपम जाज्वल्यमान गुण-रत्न पाये जाते है, जिनके प्रकाश में उसके अन्य सहस्रों अवगुण नगण्य या तिरोभूत हो जाते हैं। इसके विपरीत कुत्ते में आत्म-विश्वास की कमी, विवेक का अभाव, टुकड़ों का गुलामीपना और स्वजाति-विद्वेष ये चार महा-अवगुण पाये जाने से उसके अनेकों गुण तिरोभूत हो जाते हैं। सिंह में उक्त चार गुणों के कारण ओज, तेज और शौर्य का अक्षय भण्डार पाया जाता है और ये ही उसकी सबसे बड़ी विशेषतायें हैं, जिनके कारण सिंह की उपमा दिये जाने पर मनुष्य हर्ष और गर्व का अनुभव करते हैं। कुत्ते में हजारों गुण भले ही हों, पर उसमें उक्त चार महान् गुणों की कमी और उनके अभाव से प्रगट होने वाले चार महान् अवगुणों के पाये जाने से कोई भी कुत्ते की उपमा को पसन्द नही करता। इस प्रकार यह फलितार्थ निकलता है कि सिंह और श्वान में आकाश-पाताल जैसा महान् अन्तर है।

ठीक यही अन्तर सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि में है। सम्यक्त्वी सिंह के समान है और मिथ्यात्वी कुत्ते के समान। सम्यक्त्वी में सिंह के उपर्युक्त चारों गुण पाये जाते हैं। आत्म-विश्वास से यह सदा निःशंक और निर्भय रहता है। विवेक प्रगट होने से वह अमूढ़दृष्टि या यथार्थदर्शी बन जाता है। पुरुषार्थ के बल पर वह आत्मनिर्भर रहता है और सजातीय-वात्सल्य से तो वह लबालब भरा ही रहता है। सम्यक्त्वी स्वभावतः अपने सजातीय या सा-धर्मी जनों से 'गो वत्सम' प्रेम करता है। पर मिथ्यात्वी सदा सजातियों से जला ही करता है, उनके उत्कर्ष को देखकर कुढ़ता है और अवसर आने पर उन्हें गिराने और अपमानित करने से नहीं चूकता।

इन गुणों के प्रकाश में यदि सम्यक्त्वी के चारित्र मोह के उदय से अवरति-जनित अनेकों अवगुण पाये जाते हैं, तो भी वे उक्त चारों अनुपम गुण-रत्नों के प्रकाश में नगण्य से हो जाते हैं। इसके विपरीत मिथ्यात्वी में दया क्षमा, विनय, नम्रता आदि अनेक गुणों के पाये जाने पर भी आत्मविश्वास की कमी से वह सदा सशंक बना रहता है। विवेक के अभाव से उस पर अज्ञान का पर्दा पड़ा रहता और इस लिए वह निस्तेज एवं हतप्रभ होकर किंकर्तव्यविमूढ़ बना रहता है, पुरुषार्थ की कमी के कारण वह सदा टुकड़ों का गुलाम और दूसरों का दास बना रहता है तथा स्वजाति-विद्वेष के कारण वह घर-घर में दुतकारा जाता है।

हमें श्वानवृत्ति छोड़ कर अपने दैनिक व्यवहार में सिंहवृत्ति स्वीकार करना चाहिए।

शंका—समाधान

शंका-जबकि सिंह और श्वान दोनों मांसाहारी और शिकारी जानवर है, तब फिर इन दोनों में उपर्युक्त आकाश-पाताल जैसे महान् अन्तर उत्पन्न होने का क्या कारण है?

समाधान-इसके दो कारण हैं:-एक अतरंग और दूसरा बहिरंग। अन्तरंग कारण तो सिंह और श्वान नामक पंचेन्द्रिय जाति नामकर्मका उदय है औ बहिरंग कारण बाहिरी संगति, मनुष्यों का सम्पर्क एवं तदनुकूल अन्य वातावरण है। अन्तरंग कारण कर्मोदय के समान होने पर भी जिन्हें मनुष्य के द्वारा पाले जाने आदि बाह्य कारणों का योग नही मिलता, वे जंगली आज भी भारी खूंखार और भयानक देखे जाते हैं, जिन्हें लोग 'घुना कुत्ता' कहते हैं। घुना शब्द 'श्वान' का ही अपभ्रंश रूप है जो आज भी अपने इस मूल नाम के द्वारा स्वकीय असली रूप खूंखारता का परिचय दे रहा है। मनुष्यों ने इसे पालपुचकार के उसे उसकी स्वाभाविक शक्ति से बेभान करा दिया और रोटी के टुकड़े खिला-खिला कर उसे 'दोगला'[1] बना दिया है।

शंका-बहिरंग कारण और उनका असर तो समझ में आया, पर यह सिंह और श्वान नामक नामकर्म के उदयरूप अन्तरंग कारण क्या वस्तु है ?

समाधान-जो कारण बाहिर में दृष्टिगोचर न हो सके पर अन्तरंग में भीतर आत्मा के ऊपर अपना सूक्ष्म असर डाले, उसे अन्तरंग कारण कहते हैं। जीव अपनी भली-बुरी नाना प्रकार की हरकतों से अपने आत्मा पर जो संस्कार डाल देता है, उसे जैन शास्त्रों की परिभाषा में 'कर्म' कहते हैं और वही कर्म संचित संस्कारों का फल देने के लिए अन्तरंग कारण है।

शंका-वे ऐसे कौन से संस्कार हैं, जिनके कारण जीव सिंह और श्वान नामक कर्म को उपार्जन करता हैं और उनके उदय से सिंह और कुत्ते पर्याय को धारण करते हैं?

समाधान-पशुओं में उत्पन्न होने का प्रधान कारण 'मायाचार' है। सिंह और श्वान दोनों ही पशु है, अतः यह स्वतः सिद्ध है कि दोनों ने पूर्व भव में भर पूर मायाचार किया है। मनमें कुछ और रखना, वचन से कुछ और कहना, तथा काम कुछ और ही करना, यह मायाचार कहलाता है। यह मायाचार कोई प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए करता है, कोई धन कमाने के लिए और कोई व्यभिचार आदि अन्य मतलब हल करने के लिए। धन को ग्यारहवाँ प्राण कहा गया है जो मायाचार करके दूसरे के धन को हड़प करते हैं, वे मांस भक्षी या छोटे-मोटे जीवों की जिन्दा हड़प जाने वाले जानवरों में पैदा होते हैं। सिंह और श्वान दोनों ही मांस भक्षी हैं, पर इनका पूर्वभव में मायाचार धन-विषयक रहा, ऐसा जानना चाहिए। जो जीव सामने जाहिर में तो धनियों की खुशामद करते हैं और अवसर पाते ही पीछे से उसके धन को चुरा लेते हैं, या कर्ज लिए हुए, और अमानत रखे धन को हड़प करने की भावना रखते हुए भी कभी-कभी अमानत रखने वाले को ब्याज या सहायता आदि के रूप में कुछ तांबे के टुकड़े देते रहते हैं, वे तो कुत्तों के संस्कार अपनी आत्मा पर डालते हैं। किन्तु जो दूसरे के धन को चुराने या हड़प करने के लिए न सामने खुशामद ही करते हैं और न पीछे धन को चुराते हैं, किन्तु दिन भर तो स्वाभिमान का बाना पहने अपने घरों में पड़े रहते हैं और रात को शस्त्रों से लैस होकर दूसरों पर डाका डालते हैं, वे जीव शेर, चीते, सिंह आदि जानवरों में उत्पन्न होने का कर्म उपार्जन करते हैं। जो मायाचार करते हुए अपने सजातीयों का उत्कर्ष नहीं देख सकते, उन्हें नीचा दिखाने, मारने और काटने को दौड़ते हैं, वे कुत्ते का कर्म संचय करते हैं किन्तु जो उक्त प्रकार का मायाचार करते हुए भी अपने सजातीयों का सम्मान करते हैं। उन्हें काटने नहीं दौड़ते, पेट के लिए दूसरों की खुशामद नहीं करते, दूसरों के इशारों पर नहीं नाचते, भले-बुरे का स्वयं विवेक रखते है और आत्मनिर्भर रहते हैं, वे सिंह नामक नामकर्म को उपार्जन करते हैं।